नव सृजन के साथ जुड़ी ध्वंस की अनिवार्यता

– श्रीराम शर्मा आचार्य

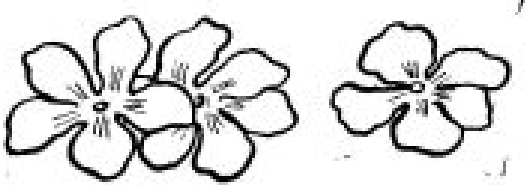

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नव सृजन के साथ जुड़ी ध्वंस की अनिवार्यता

स्थूल बुद्धि और चर्म चक्षुओं की पकड़-परिधि बहुत सीमित है। यदि इन्हीं पर निर्भर रहा जाय तो किसी भी तथ्य को समझना और किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ़ना सम्भव न हो सकेगा। महत्त्वपूर्ण प्रसंगों में हमेशा सूक्ष्म बुद्धि एवं बेधक पारदर्शी दृष्टि का अवलम्बन लेना होता है।

प्रकृति के प्रत्यक्ष स्वरूप को ही सब कुछ समझने वाले उसके पीछे छिपे परोक्ष रहस्यों को समझने में कहाँ सफल हो पाते हैं? पृथ्वी धुरी पर भी घूमती है और द्रुतगति से पृथ्वी की परिक्रमा भी करती है। यह बात प्रत्यक्ष देखने का हठ करने वाले को समझाई ही नहीं जा सकती। ऐसे कई प्रकरण हैं जिन्हें समझने के लिए सूक्ष्म बुद्धि का आश्रय लेना पड़ता है। रहस्यों को समझने में समर्थ ऐसे ही व्यक्तियों को बुद्धिमान तत्त्वदर्शी आदि नामों से जाना और सराहा जाता है।

समय की विपन्नता उन्हें कदाचित ही दीख पड़ें जिनकी दृष्टि कमाने सोने, जागने तक सीमित है। उनके लिए तो जीवन चक्र का ढर्रा भी एक रस है जबकि मनुष्य बढ़ने, घटने और मृत्यु के मुख में घुसने के नियति चक्र में तेजी से घसीटा जा रहा होता है। इनदिनों अपने चारों ओर जो घटित हो रहा है, होने जा रहा है, उसका स्वरूप समझना—मूल्यांकन करना मोटी दृष्टि से संभव नहीं।

इनदिनों प्रकृति प्रकोपों का कुचक्र अधिकाधिक विपन्न होता चला जा रहा है। हजारों वर्षों से ऐसी दैवी विपत्ति धरती पर नहीं उतरी जितनी कि इनदिनों दृष्टिगोचर हो रही है। धरती और प्रकृति के बीच एक बहुत ही मधुर सन्तुलन अनादि काल से चला आ रहा है। वही मूल कारण है कि मौसम, जलवायु, वनस्पति एवं प्राणी जीवन का ऐसा पारस्परिक सौहार्द्र भरा सुयोग बन पड़ा है जिसके आधार पर धरती को ब्रह्माण्ड के ग्रह-गोलकों की साम्राज्ञी का श्रेय मिला और स्रष्टा की अनुपम कलाकृति कहा गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यदि यह सन्तुलन न बैठता तो चन्द्रमा जैसी निस्तब्धता, कुरूपता और भयंकरता ही अपनी धरती पर बनी होती ।

जिन्होंने अन्तर्ग्रही परिस्थितियों व हलचलों का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है, उनका मत है कि विगत कुछ दशकों से पर्यावरण असन्तुलन बढ़ता जा रहा है । इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप अनेकों प्रकार के व्यतिक्रम देखने में आ रहे हैं जो सीधे-सीधे अदृश्य जगत की परीक्षण विधि व्यवस्था में असन्तुलन का संकेत देते हैं । खगोल विज्ञानियों तथा पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि यही स्थिति यथावत बनी रही तो आने वाले पन्द्रह वर्षों में प्राकृतिक विपदाओं विक्षोभों की भयावह विभीषिका प्रस्तुत हो सकती है । सारा संसार ही उसकी चपेट में आ सकता है तथा मानव जाति को त्रास भुगतते -भुगतते अपना अस्तित्व गँवाना पड़ सकता है ।

जल प्रलय, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्पों की बाढ़े, ज्वालामुखी विस्फोट, महामारियाँ, कॉस्मिक किरणों के कारण नये-नये रोग बवण्डर-तूफान आदि प्रकृतिगत विक्षोभ कहे जा सकते हैं । पर्यावरण प्रदूषण, न्यूक्लियर, विस्फोट अणु प्रक्षेपास्त्रों की अन्तरिक्षीय होड, बाँधों और उद्योगों का अन्धा धुंध बिना किसी नीति-निर्धारण के बनते चले जाना-इन विक्षोभों के मानव कृत कारण कहे जा सकते हैं । पुच्छल तारे के प्रकट होने के दुष्परिणाम सौर कलंक व ज्वालाएँ, चन्द्र व सूर्य ग्रहण, अन्तर्ग्रही असन्तुलन, उल्कापात है कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनमें प्रकृति को प्रधान कारण माना जा सकता है । लेकिन इन सबका समुच्चय जब एक साथ होने लगे तब इनका प्रभाव पृथ्वी वासियों पर कितना घातक होगा, इसकी मात्र कल्पना भर की जा सकती है ।

मनुष्य के पुरुषार्थ और कौशल को कितना ही क्यों न सराहा जाय पर यह निश्चित है कि वह प्रकृति प्रकोप का एक झटका भी सहन नहीं कर सकता । जब भी, जहाँ भी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि-भूकम्प-तूफान-महामारी आदि के प्रकृति विपर्यय सामने आते हैं मनुष्य चीं; बोल जाता है और उसका सारा पराक्रम एक कोने पर रखा रह जाता है । सृष्टि के इतिहास में कई बार हिम, प्रलय, अग्नि प्रलय जैसे भयावह समय आए हैं । उनने धरती का नक्शा ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बदल दिया। प्राणियों और वनस्पतियों की प्रजातियाँ ही बदल गयीं। कभी डायनासोर जैसे विशाल काय जन्तु इस पृथ्वी पर वास करते थे, आज उनका नामोनिशान ही मिट गया है। सहस्राब्दियों की उलट-पुलट के बाद जो बचा उससे कहीं ऐसी स्थिति बनी जिसे निर्वाह की दृष्टि से सरल साधारण कहा जा सके, जब भी ऐसे भयानक प्रलयंकर अवसर आते हैं तब मनुष्य को हजारों साल का प्रगति उपार्जन हाथ से गंवाना पड़ता है और जान बचाने का आश्रय तलाशने में यदि कुछ सफलता मिल सके तो उतने को ही सौभाग्य मानकर सन्तोष करना पड़ता है।

इनदिनों प्रकृति प्रकोपों का जो सिलसिला चल पड़ा है, वह कुछ समय से क्रमशः अधिक तीव्र और भयानक होता चला जा रहा है। पर्यवेक्षण से अनेकों डरावने तथ्य सामने आते हैं और साथ ही सूक्ष्मदर्शियों द्वारा इस सन्दर्भ में जो अनुमान लगाए गए हैं, वे और भी अधिक चिन्ता उत्पन्न करते हैं।

हरीतिमा की चादर से लिपटा यह धरती धीरे-धीरे निर्वसन होती जा रही है। औद्योगीकरण ने पृथ्वी के सौन्दर्य—सुषमा को छीनकर उसे कुरूप ही नहीं बना दिया वरन् वातावरण को इतना विषाक्त, कर दिया है कि कभी भी ध्रुवों के पिघलने से जल प्रलय का संकट उठ खड़ा हो सकता है। वातावरण में बढ़ती कार्बन-डाय ऑक्साइड की मात्रा ने मनुष्य को शारीरिक व्याधियों, मानसिक तनाव के रूप में तथा समग्र प्रकृति चक्र को पर्यावरण असन्तुलन, मौसम में अप्रत्याशित परिवर्तन के रूप में प्रभावित किया है। १९४८ में इस गैस का पर्यावरण में उत्सर्जन पांच सौ पचास करोड़ टन था। लगभग चौवन प्रतिशत हरीतिमा का आवरण इसे सोख लेता था, शेष भूमिका समुद्र निभाता था। १९८२ में यह उत्सर्जन बढ़कर २१४०करोड़ टन हो गया एवं निर्वनीकरण वन सम्पदा मात्र अठारह से इक्कीस प्रतिशत रह गई है। इस सदी में जहाँ पृथ्वी के कवच आयनोस्फियर का तापमान मात्र एक डिग्री सेण्टीग्रेड बढ़ना था—चार डिग्री बढ़ा है जिससे ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण बढ़ी ऊष्मा जीवधारियों के आस-पास ही कैद होकर रह गई है। इससे मौसम पर कैसे प्रतिकूल प्रभाव पड़े हैं, इसका मूल्यांकन समाचारों पर एक दृष्टि डालकर किया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वविख्यात "प्लेन ट्रुथ" पत्रिका के इस अप्रेल ८३ अंक में एक पर्यवेक्षण छपा है जिसमें इस शताब्दी के मौसम परिवर्तनों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि ऐसा प्रकृति प्रकोप पिछले हजारों वर्षों में देखने में नहीं आया। उसमें अदृश्य के गति चक्र का विश्लेषण करते हुए यह भी बताया है कि अगले दिनों यह संकट अधिक गहरा होने की संभावना है।

गत दो दशकों में हुए इन परिवर्तनों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार जाना जा सकता है।

१९६१ में पूर्वी अफ्रीका में भयंकर वर्षा हुई तथा उत्तरी भारत को सबसे कड़ी शीत ऋतु का सामना करना पड़ा। १९६२-६३ में २२० वर्ष बाद पहली बार इंग्लैण्ड व उत्तरी यूरोप को सबसे ठण्डी व लम्बी शीत ऋतु का सामना करना पड़ा। इसी वर्ष (१९६२) में उत्तरी भारत में मई का पूर्वार्ध अत्यन्त ठण्डा व उत्तरार्ध अत्यधिक गर्म रहा। पहले मृत्यु शीत लहर से हुई एवं फिर लू के प्रकोप से।

जून १९६४ में दक्षिणी व दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका में पहली बार भयंकर हिमपात हुआ जबकि जुलाई १९६६ में अमेरिका ने पहली बार ऐसी लू का सामना किया जिसमें दस हजार से भी अधिक व्यक्ति मरे पाए गए। ऐसी स्थिति यहाँ पहले कभी नहीं आई थी। १९६८ से १९७३ तक लगातार इथोपिया व चिली में भयावह सूखा पड़ा जिससे पचास प्रतिशत व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। जबकि १९७३ के अगस्त में थार के रेगिस्तान में भयंकर बरसात व बाढ़ आई। जुलाई ७४ में बम्बई की बाढ़ ने पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिए जबकि १९७५ में दस माह से भी अधिक लम्बी भयंकर शीत ऋतु का सामना अलास्का, पश्चिमी आस्ट्रेलिया, पूर्वी कनाडा को करना पड़ा। इसी वर्ष भारत ने भी शीतलहर का प्रकोप झेला जबकि अगस्त माह में इंग्लैण्ड, उत्तरी पश्चिमी यूरोप, डेनमार्क आदि देशों को १९७५ व १९७६ में लगातार २ साल वैसी ही लू का सामना करना पड़ा जैसीमई माह में भारत के उत्तरी भारत-बिहार आदि प्रदेशों में चलती है। १९७७ में आयी लूनी नदी की बाढ़ तथा लद्दाख की सारी पहाड़ी नदियों के आवेग भरे उफान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने सबको स्तम्भित कर दिया। १९८०-८१ में मोरबी तथा पूरे राजस्थान के बारिस भरे अप्रत्याशित मौसम व प्रलय जैसी बाढ़ ने सारे मौसम विज्ञानियों को अचम्भित कर दिया।

१९८२ ८३ के अब तक के मौसम पर टिप्पणी करते हुए विद्वान लेखक डॉन टेलर ने लिखा है कि भूगर्भीय आणविक प्रयोग परीक्षण, प्रदूषण, संसाधन दोहन, जीवाष्म प्रज्वलन जैसे मानवी कृत्यों की परिणति इस डेढ़ वर्ष में ही बड़े विकराल रूप में देखने को मिली है। सन् ८२ में ही अमेरिका में ऐसा भयंकर हिमपात हुआ जितना कभी देखा सुना नहीं गया। आस्ट्रेलियामें इसके विपरीत शताब्दी का अभूतपूर्व सूखा पड़ा। इस देश को बाहर से मांग कर अपना गुजारा करना पड़ा जबकि निजी उत्पादन का ४५ प्रतिशत यह निर्यात करता रहा है। टोंगा महाद्वीप भयंकर तूफान में पूर्णरूपेण ध्वस्त हो गया एवं चीन के सबसे बड़े प्रान्त लाओनिंग में सूखा तथा सटे हुए शांघजींग प्रान्त में बाढ़ के प्रकोप से अगणित व्यक्ति मारे गए। उत्तरी फ्रांस की रिकार्ड बर्फ, इटली में दिन में गर्मी तथा रात्रि को बर्फ, जापान की नागासाकी नदी में विनाशकारी बाढ़ एवं उत्तरी जापान में भूकम्प, न्यूजीलैण्ड में सूखा तथा उत्तरी ध्रुव के समीपस्थ रूसी क्षेत्र में सर्दी के स्थान पर गर्म मौसम ऐसे परिवर्तन हैं जिनका वैज्ञानिकों के पास कोई जवाब नहीं है।

मार्च ८२ में मैक्सिको में एक भयंकर विषधूम्र वाला ज्वालामुखी फटा जिसकी बादल जैसी मोटी परत अभी भी आकाश में घूमती रहती है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उसकी लालिमा सारे विश्व में महीनों तक देखी गई। भारत में आन्ध्र, देहली, उड़ीसा, सौराष्ट्र, राजस्थान आदि में प्रकृति-प्रकोप से जो दुर्घटनाएँ घटित हुईं उनसे सभी परिचित हैं।

यह भूतकाल का घटनाक्रम है। भविष्य में जो घटित होने की सम्भावना है उसकी भी प्रकृति पर्यवेक्षण तथ्यों समेत जानकारी सर्व साधारण को करा रहे हैं। और समय रहते उनसे सचेत रहने तथा बचाव सोचने का मनोबल उत्पन्न कर रहे हैं।

इन्हीं दिनों पृथ्वी के निकट से एक धूम्र केतु गुजरा है जिसमें ऐसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषैले तत्त्व पाए गए जैसे कि सामान्य धूमकेतुओं में से किसीमेंभी नहीं होते। हैली धूमकेतु की चर्चा तो सभी वैज्ञानिकों की जुबान पर है जो १९८५-८६में प्रकट होगा। पहले भी सन् १५३१,१६०७, १६८७ में ऐसे ही धूमकेतु पृथ्वी के समीप आए हैं और उनके प्रभावों से पृथ्वी के अनेक खण्डों में युद्ध छिड़े तथा विनाशकारी विपत्तियों के दृश्य उपस्थित हुए। आगत में दृश्यमान हैली धूमकेतु सर्वाधिक लम्बा होगा। इसकी पूँछ साढ़े आठ किलोमीटर लम्बी है। पहले भी दोनों विश्व युद्धों के पूर्व एक-एक धूमकेतु पृथ्वी के बड़े समीप से गुजर चुके हैं। "बिवेयर–हैली इज कमिंग" पुस्तक में वैज्ञानिकों की एक टीम ने उन आशंकाओं को व्यक्त किया है जो इस कारण धरती निवासियों को सहना पड़ सकती हैं। विशेषज्ञों ने इस पुस्तक में अनेकानेक तथ्यों का हवाला देते हुए बताया है कि यों तो पुच्छल तारे का पृथ्वी के समीप आना व टहलते टहलते गुजर जाना एक सामान्य प्रक्रिया कही जा सकती है लेकिन प्रस्तुत धूमकेतु जितना लम्बा है व जितनी निटकता से वह पृथ्वी के वातावरण से निकलेगा, उससे अनेकानेक रोगों के पनपने, महामारियाँ फैलने तथा कॉस्मिक किरणों की बौछार से बहुसंख्य जनता के प्रभावित होने की आशंका है। इसकी पूँछ से उत्सर्जित विषाक्त गैसें पृथ्वी के समीप आते ही इसके मलवे के सड़नेसे वातावरण में भर जाती हैं। इससे नये-नये प्रतिरोधी बिषाणु तैयार होते हैं, साथ ही मानसिक विक्षिप्तता, अपराधों आत्म हत्याओं के दौरे अधिक पड़ने लगते हैं। विलियम हैली जिसके नाम पर इसे यह इनाम दिया गया है,ने पता चलाया है कि यह पर्यवेक्षण गत ६ शताब्दियों में अवतरित धूमकेतुओं पर किया गया। हर बार पिछली घटनाओं की गम्भीरतम पुनरावृत्ति हुई है।

सौर गतिविधियों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों का कथन है कि सूर्य का तापमान निरन्तर कम होता जा रहा है, जिसका प्रभाव निश्चित ही धरती के वातावरण पर पड़ रहा है। सूर्य गत ४० वर्षों से निरन्तर सिकुड़ रहा है एवं सूर्य कलंकों की संख्या बढ़ी व प्रकट होने की मध्यावधि कम हुई है। इसके प्रभावों के कारण धरती पर हिम युग की संभावना प्रबल होती जा रही है। अब तक चार हिम युग आ चुके हैं। अब वैज्ञानिकों के अनुसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाँचवें हिम युग की तैयारी है। सर फ्रेड हायल ने तो इस सभावना के आगामी पन्द्रह वर्षों में ही साकार होने की संभावनाएँ बतायी हैं। शीत लहरों के वर्त्तमान क्रम को वे इसकी पूर्व भूमिका बताते हैं।

वैज्ञानिक गण यह भी कहते हैं कि इन दिनों पृथ्वी के भूचुम्बकत्व में तेजी से कमी आई है। आशंका है कि यह घटोत्तरी जारी रही तो अगले दिनों स्थिति भयंकर होगी और उसके महाविनाशकारी परिणाम होंगे।

प्रकृति मदमस्त हाथी की तरह जिस तरह विक्षुब्ध होती चली जा रही है, उसे मनुष्य को अनुशासन की विधि-व्यवस्था के रूप में समझना चाहिए। जब किसी बच्चे पर या अपराधी पर, किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता तो दण्ड की नीति ही अपनानी पड़ती है। अंकुश की आवश्यकता इसी वर्ग को मर्यादा में रखने के लिए पड़ती है। प्रकृति अपनी पाठशाला में मनुष्य को अनुशासन का आद्याक्षर सिखाने हेतु जो उपक्रम अगले दिनों अपना सकती है, उसके पूर्व संकेत अभी से मिल रहे हैं। ऐसे में विनाश से भयभीत होने के बजाय जन समुदाय को जागृत सृजन शिल्पी की भूमिका निभाने हेतु तत्पर हो जाना चाहिए।

कुंभकरण व रावण का आतंक प्रत्यक्ष सामने होते हुए भी रीछ-वानर दैवी चेतना के संरक्षण में लड़ने को तैयार हो गए थे। गोवर्धन को ऊँचा उठाने वाले छोटे-छोटे ग्वाले पहाड़ के दबने की संभावना से डरे नहीं—जमकर खड़े हो गए। साहस भर जिन्दा हो जाय तो दैवी चेतना-अवतार प्रेरणा अपनी भूमिका स्वयमेव निभाती है। वातावरण परिशोधन हेतु जिस पुरुषार्थ युक्त एकात्मता की, अध्यात्म स्तर के सामूहिक प्रयोगों की आवश्यकता है, उसके लिए हर सोये को मूर्च्छना त्याग कर कमर कस कर, खड़े हो जाना चाहिए। प्रज्ञावतार की प्रमुख भूमिका नव निर्माणकी है। विनाशकी संभावनाएँ एवं सृजन की तैयारी-युगों-युगों से अवतार प्रक्रिया की यही कार्य पद्धति रही है। प्रस्तुत संभावनाओं को पलटना जिस साहस के बलबूते बन पड़ेगा उसे जुटाना, इस हेतु सुझाए गए उपक्रमोंमें उसे नियोजित कर देना ही आजका युग धर्म है।★

क्र० १५२/प्र०-युग निर्माण योजना,मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org